शिवनारायण गौर

# गणेश मामा

गणेश मामा का पूरा नाम यूँ तो गणेश प्रसाद लखेरा था पर लोग उन्हें गणेश मामा के नाम से ही पुकारते थे। सफेद बण्डी और पट्टे वाली घुटने तक लम्बी चड्डी पहने वे गाँव की गली-गली छान डालते। उनके गाने की आवाज़ सुनने वाला कह उठता – अरे, गणेश मामा आ रहे हैं।

गणेश मामा की चूड़ियों की दुकान थी। वे गाँव-गाँव चूड़ी बेचने भी जाते। हाटों में मामा की दुकान भी सजती। क्या बच्चे, क्या तो बड़े-बूढ़े, वे जहाँ जाते उन्हें लोग घेर लेते और फिर शुरू होता गाना-बजाना। लोग फरमाइशें करते जाते और मामा उन्हें पूरी करते जाते। वे हर गाने को डूब कर गाते थे। पूरी शिद्दत से। हालाँकि लोग गाने से ज़्यादा उनके वाद्य पर फिदा होते थे।

मामा का वाद्य यंत्र अनूठा था। उनका खुद का बनाया हुआ। उसे वे पुंगी कहा करते। पुंगी को बनाने का उनका तरीका बड़ा अनेखा था। पुंगी बनाने के लिए धागे की खाली रील (गिट्टी) की ज़रूरत पड़ती। वे दर्ज़ियों से खाली रीलें जुटाते रहते। रील के एक सिरे पर एक झिल्ली-सी चिपकाते। यह झिल्ली दरअसल एक कीड़े द्वारा छोड़े गए द्रव्य के सूखने से बनती है। इस तरह बनी पुंगी के एक सिरे से फूँकने पर वह बाँसुरी की तरह बज उठती। पुंगी के साथ वे अपनी आवाज़ मिलाने की भी पूरी कोशिश करते। अगर कोई कहता कि पुंगी अच्छी है तो वे उसे ही दे देते और जेब से दूसरी निकाल लेते। जेब में आठ-दस पुंगी लेकर ही वे घर से निकलते। यदि गाँव से बाहर जाना हो तो यह संख्या बढ़ानी भी पड़ती। जाने कब, कौन और कहाँ पुंगी माँग ले!

एक बार किसी ने उनसे कह दिया कि मामा तुम तो पुंगी बनाने के लिए कीड़ों के घर तोड़ देते हो! मामा ने उस दिन से झिल्ली से तौबा कर ली। और उसकी जगह अब वे बीड़ी का नरम कागज़ लगाते। अब खाली रीलों के साथ-साथ वे बीड़ी के खाली बण्डल के कागज़ भी ढूँढने लगे थे। उनकी बण्डी के जेब पुंगी और बीड़ी के कागज़ों से भरे रहते। अगर कोई मामा को चिढ़ाने लगता तो वे गुस्सा हो जाते। और मामा गुस्सा होते तो समझो चिढ़ाने वाले की खैर नहीं। पर समझाने पर वे झट से मान भी जाते। वे गाना गा देते तो लोग समझते कि हाँ, मामा अब गुस्सा नहीं हैं। मामा घुड़सवारी के भी शौकीन थे। उनके घर में एक घोड़ी थी। इसी घोड़ी से मामा गाँव-गाँव चूड़ी बेचने जाते थे।

मामा आज इस दुनिया में नहीं हैं पर गणेश मामा और उनके गाने-बजाने को आज भी लोग बहुत याद करते हैं।

## गणित पत्ती

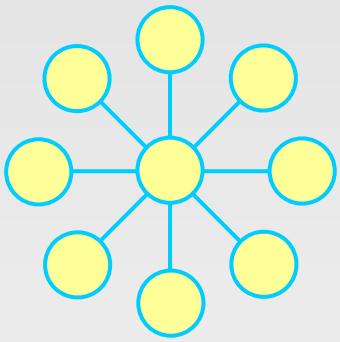

इस चित्र में हर सीधी रेखा में तीन गोले हैं। तुम्हें उनमें 4 से 12 तक की संख्याएँ भरनी हैं। संख्याएँ इस तरह भरनी हैं कि हर सीधी रेखा के तीनों गोलों का जोड़ 21 हो।

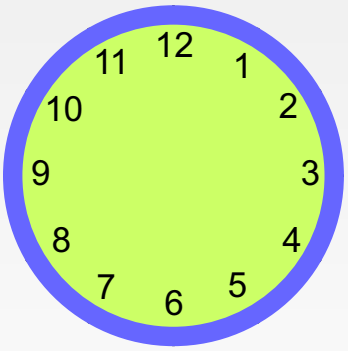


दो सीधी रेखाएँ खींचकर इस गोले को तीन भागों में बाँटो। हरेक भाग की संख्याओं का जोड़ बराबर होना चाहिए।